

पाँचो द्वीपों में फैलाया आध्यात्मिक प्रकाश



तब से दादी प्रकाशमणि, इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं का एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाशस्तम्भ बन कर उभरीं।

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हजारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया।

दादी की दिव्य बुद्धि, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सदप्रयास से दिल्ली, मुम्बई, अमृतसर, कानपुर, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की

-शेष पेज 10 पर

अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्तिस्वरूपा है। नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और सन्तुष्टता की मणि सन्तोषी देवी बन सकती है, यह अपने जीवन द्वारा दादी प्रकाशमणि ने कर दिखाया। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 130 देशों के लाखों बहनों - भाइयों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। दादी प्रकाशमणि ने अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेम, शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करुणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया।

दिव्यता की मूर्ति दादी प्रकाशमणि का जन्म सन् 1 जून 1922 में हैदराबाद सिन्ध (पाकिस्तान) में हुआ। वह बचपन

से ही दिव्य आभा से आलोकित थी। सन् 1937 में विश्व के पालनहार परमपिता परमात्मा शिव ने हीरे जवाहरात के प्रतिष्ठित व्यापारी दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप एवं भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार कराया। 'प्रजापिता ब्रह्मा' के दिव्य नाम से जाने जाते उन्हीं दादा जी ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की। हैदराबाद के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी की पुत्री रमा देवी 14 वर्ष की तरुण आयु में, इस संस्था के संस्थापक के संपर्क में आयी। उसे भी अनेक दिव्य

साक्षात्कार हुए, जिसमें उन्होंने ज्योति स्वरूप शिव एवं नई सतयुगी दुनिया देखी। उन्हें वर्तमान विश्व, प्रकृति के प्रकोप, अणुशक्ति, गृह युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन होने का भी दृश्य दिखाई दिया। रमा देवी के दूरदर्शी एवं भविष्यवक्ता लौकिक पिता को अपनी सुपुत्री के भावी जीवन के संकेत प्रारंभ से ही मिल गये थे। उन्हीं के अनुरूप यही रमादेवी आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति पर प्रकाशमणि कहलाई।

रत्नप्रभा दादी प्रकाशमणि ने अपनी बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व

परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में अपने आपको प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनी। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि, अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर, अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया।



भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, website:www.omshantimedia.info

प्रति